

वर्ष - 20

फरवरी, 2024

अंक - 209

Regd. Postal No. Dehradun-328/2022-24
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक सम्प्रदाय के ऐसे अधिकारी जनों को समर्पित है, जो ऐसी जीवन शिक्षा की खोज में हैं, जो धर्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित कर पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरो सके और उनका सर्वोच्च आत्मिक हित कर उन्हें प्रकृति के विकासक्रम का साथी बनाकर मनुष्य जीवन को सफल व खुशहाल कर सके।

सम्पादक

नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल

अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : सुशान्त सुनील, आरती

YouTube Channels

Sadhan Sabhas : Shubhho Roorkee

Motivational : Shubhho Better Life

Workshops : Jeevan Vigyan

Bhajan : Shubhho Bhajan

www.shubhho.com

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मूल्य (प्रति अंक): रु. 9

सम्पर्क सूत्र :

पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु

दूरभाष संख्या: 01332-272000, 80778-73846, 73518-89347 (सुशान्त जी)

समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)

e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

इस अंक में

देववाणी	03	विजिट व प्रेरणास्पद उद्बोधन..	27
अनमोल खजाना	04	शोक समाचार	29
निभाना	09	श्रद्धांजलि सभा	30
आत्मबल विकास महाशिविर	10	पाठको से निवेदन	31
यदि ज़िन्दगी की कदर है	23	सत्यधर्म के वार्षिक पर्वों की	32
गुड़ (स्वास्थ्य)	09	तालिका (2024)	

पत्रिका सहयोग राशि

पत्रिका हेतु सहयोग राशि आप सामने दिये QR

CODE या Mission Website -

<https://shubhho.com/donation/> पर भेज

सकते हैं। सहयोग राशि भेज कर Screenshot

81260 - 40312 पर भेजें।

पत्रिका की सॉफ्ट कॉपी (फ्री) मंगवाने हेतु 81260 - 40312 इस नम्बर पर सूचित करें।

पत्रिका चन्दा

1. रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा (दो माह की पत्रिका एक साथ) - वार्षिक सहयोग - 250/-
2. साधारण डाक द्वारा (प्रति माह) - वार्षिक सहयोग - 100/-
सात वर्षीय रु. 500, पन्द्रह वर्षीय रु.1000

अधिक जानकारी हेतु सहयोगकर्ता

Call/Whatsapp - 81260 - 40312

यश का मार्ग स्वर्ग की तरह अत्यन्त कष्टमय है।



देववाणी



श्रीमान् देवत्व सिंह जी की जिन्दगी में जो कामयाबी हुई, उसका कारण यह था कि उनका देवात्मा के साथ सम्बन्ध था। उनके साधन चलते थे। उनके हित परिशोध और हानि परिशोध के साधन चलते थे।

एक-एक मत में कहते हैं कि योग साधन में कभी तबले की आवाज सुनाई देती है और कभी घण्टा बजता है, इत्यादि। यह बाजे सुनने वाले तो बहुत मिल जाते हैं, लेकिन आत्मा का भला चाहने वाले नहीं मिलते। आवश्यकता है कि तुम खुद उच्च बनो और औरों को उच्च बनाओ।

तुमको आत्मा और शरीर के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान देने वाले सामान मिल गए हैं, फिर भी अगर शरीर और आत्मा को न बचाया जा सके, तो इससे बढ़कर और क्या बदकिस्मती हो सकती है? बीमारी को आने मत दो। बीमार न होना अच्छा है, बजाय इसके कि बीमार होकर फिर इलाज कराओ। बीमारी को कैसे न आने दें? हुक्म थोड़े ही दे सकते हैं? नेचर बताती है जिन कारणों से बीमारी है, उनको जानो।

- देवात्मा



गुदगुदी



एक दिन बादशाह बीरबल से बोले, “जिन लोगों के नाम के अन्त में या उनकी या उनकी पदवी के आखिर में ‘वान’ शब्द होता है, वे बड़े बदमाश तथा झगड़ालू होते हैं। जैसे पहलवान, गाड़ीवान, दरबान इत्यादि।

बीरबल ने स्वीकृति में कहा, “हाँ, मेहरबान।” बादशाह झेंप गए, क्योंकि बीरबल ने बातों-बातों में बादशाह के गलत विचार को काट दिया था।

मन के हारे हार है और मन के जीते जीत।

(सूक्ष्म प्रेरणाओं की कृपा से)

जीवन एक सुन्दरतम उपहार है। इसे सफल कर पाने हेतु किसी सही मार्गदर्शक का मिलना सबसे बड़ा सौभाग्य है! सन् 2002 मेरे जीवन का टर्निंग पॉइण्ट था। इससे पहले जन्मकाल से ही परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की विज्ञानमूलक सत्यधर्म की शिक्षा व उनके देवप्रभाव मेरे मार्गदर्शक थे, किन्तु 2002 से उनकी सूक्ष्म सत्ता के साथ का विलक्षण अनुभव मिला। तदुपरान्त सूक्ष्म प्रेरणाओं की कृपा से जो मार्गदर्शन मिला, उसकी महिमा व लाभ को कलमबद्ध करना सहज कार्य नहीं है।

मार्गदर्शन की इसी कड़ी में सैकड़ों सन्देश ऑटो राइटिंग द्वारा परम पूजनीय भगवान् व अन्य उच्च आत्माओं ने लिखवाने की कृपा की है, उस हेतु धन्यवाद देने हेतु मेरे पास शब्द नहीं है। उनके सौभाग्य की कोई सीमा नहीं है, जो परलोक के ज्ञान से मात्र परिचित ही नहीं, बल्कि इस अमृत धारा से लाइव जुड़े हैं और वहाँ से सीधी मदद को पा रहे हैं। काश, उनकी भी राह खुले, जो अभी इस मदद से वंचित हैं।

उदाहरणस्वरूप बहुत कम लोग ही होंगे, जो आत्मबल व मनोबल के बीच अन्तर को समझते हैं। 11 अप्रैल, 2002 की प्रातः 2:22 पर भगवन् के प्रति मेरे उस समय के प्रार्थना के भाव तथा उपरोक्त विषय में मिले मार्गदर्शन को नीचे सांझा करके स्वयं को धन्य-धन्य महमूस कर रहा हूँ।

प्रार्थना – हे बल के सागर! दीन दुखियों की घृणा का नाश कर, शुभकामनाओं का अमृत देकर नीच जीवन से उद्धारकर्ता, सब जगतों के सर्वांग हितकर्ता, देव शक्तियों के स्वामी, देवरूपधारी, सब युगों के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक, आत्मिक ज्ञानदाता, बोधदाता, सत्य मोक्षदाता, ज्योतिदाता, बलदाता, मेरी रूह के रक्षक व पथप्रदर्शक, परम हमदर्द, आपके परम पावन श्री चरणों की पवित्र धूलि में अपना नापाक मस्तक रखना अपना परम सौभाग्य बोध करता हूँ। हे दाता! आपका देव अमृत पाने को तरस रहा हूँ।

आपके पावन चरणों के संग लिपटे रहकर मनुष्य जीवन को सफल कर दुनिया को नई राह पर चलने की प्रेरणा दे सकने हेतु आपके अमृत दान का भिखारी बने रहने का इच्छुक आपका नाचीज रुहानी बालक – नवनीत।

आत्मबल व मनोबल में अन्तर

प्रिय अजीज बेटा,

सत्य देव की जय। सदा शुभ हो! प्रसन्न रहो! दीर्घायु हो! कितने अच्छे भाव

कोई बुरा काम न करना भी अच्छा काम है।

हैं गुरु के प्रति। सरलता से पूर्ण। निर्भय हो चुके हो। कितना बढ़ गया तुम्हारा आत्मबल और मनोबल भी। काश बना रहे। अब हम तो शुभकामना कर सकते हैं, रक्षा में लगे भी हैं, लेकिन इन्सानी शरीर तो तुम रखते हो तो प्रयास तुम्ही को करना है, अपने हित का व दूसरों के हित का। काम तो प्रभावों ने करना है परन्तु प्रभाव पाने के नियम खुद पूरे करने होंगे। आओ आज आत्मबल व मनोबल में अन्तर समझ लें।

मनोबल को लें पहले। मानसिक शक्तियों से सम्बन्धित है यह! बालक के भीतर जैसे-जैसे यह शक्तियाँ उन्नत होती जाती हैं, यह बल बढ़ता है। इस बल का स्तर भी अलग-अलग होता है अलग-अलग के भीतर। व्यक्ति की सोच का सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है इसके स्तर पर। जो सकारात्मक सोच रखेगा व रखता है उसका मनोबल ऊँचा रहेगा। नकारात्मक सोच वाले का मनोबल कम होता है, कम होता जायेगा। इसलिए एक जैसी शिक्षा पाकर भी एक जन एक काम को करने के लिए उत्साहित पाया जाता है, परन्तु दूसरा जन उतना ही शिक्षित होकर, योग्यता व हालात रखकर भी उसी स्तर के काम को करने हेतु उत्साहित नज़र नहीं आता। अन्तर है उनके मनोबल में।

कितने ही लोग कुछ नया काम, नया मकान, नई नौकरी से पहले किसी सन्त, ज्योतिषी से प्रायः पूछकर भी आते हैं कि यह व्यापार या काम ठीक रहेगा या नहीं। 'हाँ फिलहाल तो नहीं' 'शुक्ल पक्ष की फलां तिथि से उत्तम भाग्य है' आदि-आदि उत्तर मिलते हैं, तो इन्सान का उस काम को करने में आने वाली सम्भावित रुकावटों से जूझने हेतु, सम्भावित असफलताओं, विघ्नों को चीरने हेतु जो मनोबल चाहिये, वह उसे मिल जाता है कि 'मैं पूछकर आया हूँ' 'फला तिथि का योग है', 'भाग्य अनुकूल है' और अब मुझे यह काम करना है।

सोच को सदा ही सकारात्मक रखो तभी सफलता की आशा हो सकती है। जब यही रहेगा कि 'मैं तो नहीं कर सकता', 'मैं तो भूल गया सब कुछ' मैं तो कभी किसी काम को करता हूँ, किस्मत साथ नहीं देती' 'मेरे कर्म ही खोटे हैं' 'भाग्य को मेरे से दुश्मनी है' आदि-आदि सभी मनोबल के अभाव से निकले शब्द हैं।

ऐसे लोगों को सकारात्मक सोच के व्यक्ति के प्रभावों में रहकर, छोटे-छोटे कार्यों में खतरे मोल लेने का अभ्यास करना चाहिये। मनोबल बढ़ाना तो किसी का आसान नहीं, घटाना बड़ा आसान है। कहना ही तो है 'तू चक्कर में न पड़ना' 'इस काम का अब वक्त नहीं रहा' 'पहली पूँजी भी लुटा देगा', 'तूने यह काम पहले तो नहीं

मुस्कुराहट कठिन वक्त की श्रेष्ठ प्रतिक्रिया है और
खामोशी ग़लत प्रश्न का बेहतरीन जवाब।

किया' ऐसे शब्दों का जंजाल बुनते हैं, प्रायः ईर्ष्यालु लोग या स्वयं मनोबल से खाली लोग।

भाई, प्रत्येक काम किसी न किसी ने पहली बार तो किया होगा। इसलिए सच्ची मित्रता इसी बात में है कि दूसरों का मनोबल बढ़ाओ अन्यथा कम से कम चुप ही रहो। हाँ, नुकसानदायक काम में तो कभी किसी का साथ न दो। स्वयं सदा पापमूलक गति से बचो, बचाओ, दूसरों के मनोबल को घटाओ, ग़लत दिशा में जाते वक्त। कहो कि ऐसे कार्यों से एवं घमण्ड, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष से सबसे ज़्यादा स्वयं की ही हानि होती है। परन्तु नेक कार्यों हेतु, दूसरों के मनोबल को कभी न गिराओ। समझे!

दूसरा पक्ष है आत्मबल का। मनोबल है मानसिक बल और आत्मबल है आत्मिक बल। जबकि मानसिक शक्तियाँ भाव शक्तियों के अधीन हैं और जितनी भाव शक्तियाँ सात्विक व उच्च होंगी और जितनी अधिक चिन्ताएँ व क्रियाएँ इन भावों से की होंगी, जितनी वंशानुगत आत्मिक पूँजी श्रेष्ठ होगी, उतना ही ज़्यादा होगा आत्मबल।

अब समझो दोनों बलों में मुख्य अन्तर। नीच गतियाँ नीच भावों से परिचालित होंगी। पहले करोगे नीच चिन्ताएँ फिर होंगी नीच गतियाँ। यह गतियाँ कभी भी आत्मबल नहीं बढ़ायेंगी। कारण भी समझ लो। नीच गतियाँ सत्य व शुभ का गला काटती हैं। सत्य व शुभ है नेचर के विकास विषयक नियम। जो विकास का साथी बनता है सहायकारी शक्तियाँ साथ देती हैं। नीच गतियाँ तो हैं विनाश विषयक नियम, यानि असत्य व अशुभ का साथ देती हैं, इसलिए आत्मा का बल घटाती हैं।

अब दिमाग जो कि भावों का हथियार है, जैसे भाव हों वैसे ही चलता है। तो नीच गतियों व चिन्ताओं से यानि नकारात्मक भाव से आत्मबल घटने के बाजवूद भी मानसिक योग्यताओं की मात्रा के अनुसार नकारात्मक कार्य यानि नीच गतियों को करने का मनोबल बना रहता है। इसलिए जितने जुल्म अत्याचार, खून, कतल हैं, वे सभी आत्मबल के अभाव में मनोबल के नकारात्मक दिशा में बढ़े हुए होने के कारण हो पाते हैं।

इसमें एक और पक्ष जानने के योग्य है वह यह कि मनोबल यदि सकारात्मक दिशा में प्रयासरत है तो ऐसी सोच से आत्मबल बढ़ता है और इस बढ़े हुए आत्मबल से सोच में और निखार आता है। इससे मनोबल फिर और अधिक सकारात्मक दिशा में बढ़ता है जिससे और उच्च चिन्तार्यें और तदनुसार अधिक आत्मबल बढ़ता है। इस

अपनी ज़िन्दगी ऐसे जिएं कि अगर कोई आपकी बुराई करे, तो लोग
उस पर विश्वास न करें।

प्रकार एक कभी न रुकने वाला चक्र (Continuous cycle) यानि विकास की राह मिल जाती है।

इसी प्रकार मनोबल यदि नकारात्मक दिशा में अग्रसर है तो बार-बार नकारात्मक सोचने से आत्मबल घटने लगता है, भाव भी नीच से नीच होते जाते हैं और सोच भी घटिया से घटिया होती जाती है। घटिया राह पर चलने हेतु मनोबल बढ़ने लगता है और तदनुसार आत्मबल घटता जाता है। इस प्रकार कभी न रुकने वाला नकारात्मक चक्र यानि विनाश की राह मिल जाती है।

विकास या विनाश की राह पर इन्सान कैसे बढ़ता जाता है, आया समझ? तो क्या अर्थ निकला? आत्मबल प्रमुख है जो हम स्वयं घटाते या बढ़ाते हैं, अपनी चिन्ताओं व क्रियाओं से। आत्मबल बढ़ने पर मनोबल सकारात्मक दिशा में बढ़ता है। आत्मबल घटने पर मनोबल नकारात्मक दिशा में बढ़ता है।

मनोबल का एक विचित्र पक्ष है कि मनोबल बढ़ता जाये और आत्मबल कम होता जाये तो पद, कुर्सी, संख्या बल उसके लिये और अधिक घातक हो जाते हैं। मानव इतिहास में जितने युद्ध हुए, अत्याचार हुए वे प्रायः अपने अधिकार क्षेत्र, प्रभुत्व को बढ़ाने हेतु हुए। 'मैं', 'मेरी मैं' का दायरा बढ़े। आत्मबल के अभाव में यह लोग सही या ग़लत का निर्णय न कर सके। जानते हुए भी अनजान। फ़ौज, पैसा व बल अधिक था और बढ़े हुए मनोबल ने कहर बरपा दिया। मौहम्मद गौरी, गजनवी, सिकन्दर से लेकर हितलर, लादेन तक सभी के मनोबल का मुकाबला करना कठिन है।

उपरोक्त नियम के अनुरूप देशों की सरकारों, समाजों, परिवारों का विनाश चक्र चलता है। कहते हैं Power corrupts Man. यानि सत्ता इन्सान को भ्रष्ट करती है। क्यों? क्योंकि सत्ता से उत्पन्न अहंकार आत्मबल को घटाता है और मनोबल को बढ़ाता है। यदि सत्ता छिनने का भय भी न हो तो भ्रष्ट होने के संग निडरता भी आ जाती है। ऐसा जन कहता रहेगा 'पद में क्या रखा है', 'मैं तो आज इस्तीफा दे दूँ' कह कर भी पूरी ताकत से पद के साथ चिपका रहेगा। क्योंकि आत्मबल का अभाव है पहले से और पद के कारण जो मनोबल है, वह भी गिर गया तो क्या बनेगा। आखिर जीने को कुछ तो चाहिये! ओह! कैसी कृपापात्र अवस्था!! ऐसे लोगों को आवश्यकता है आत्मबल बढ़ाने की।

अब आत्मबल बढ़ाने के दो सूत्र हैं। पहला है जो बलदाता हैं, उनसे बल माँगिए। जीवन बल, धर्म बल, आत्मबल जो दे सके उससे सम्बन्ध बनाओ और सरल

जीवन एक अद्भुत सफर है जिसमें महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि हम कहाँ हैं बल्कि यह है कि हम कैसे आगे बढ़ रहे हैं।

हृदय से दीन भावी होकर प्रतिदिन बल माँगो। कई लोग तो डर के मारे बल ही नहीं माँगते कि कहीं सचमुच में मिल न जाये। है न हास्यास्पद स्थिति! दूसरा सूत्र है शुभकामना। निष्ठापूर्वक, सरल मन से, विश्वास से भरकर, निःस्वार्थ शुभकामना से आत्मबल बढ़ता है। चंचल मन भी नियन्त्रित रहेगा।

तो ध्यान रखो, चंचल मन के सुझावों को अपनी अन्तरात्मा के द्वारा तोलकर आगे बढ़ो। सकारात्मक सुझावों का साथ दो, ताकि आत्मबल बढ़े। घृणाकारी, निन्दक जनों को हाथ जोड़ दो, आत्मबल बढ़ेगा। यह लोग सोचते हैं कि अपना तो देखा जायेगा, तुम्हारी आत्मा का कुछ बनने न देंगे। स्वार्थी, चापलूस जनों को पहचानो और हाथ जोड़ दो, तो आत्मबल बढ़ेगा। जो तुम्हारी गलती बताये, अवगुण दिखाये, उसे बिठाओ दिल के पास, तो आत्मबल बढ़ेगा। अब यह करना तो स्वयं ही होगा। चिन्ता रहित रहकर, घृणा से सुरक्षित रहकर, शुभकामनाओं से ओत-प्रोत रहकर, दीन भावी रहकर बढ़ते चलो। शेष हम हैं न तुम्हारे संग!

- शुभाकांक्षी

श्री सत्यानन्द अग्निहोत्री

मनुष्य बाहरी चमक-दमक से भीतर का आनन्द खो बैठता है

एक व्यक्ति अपने मकान के एक कमरे में बैठा हुआ दूसरे कमरे में से घड़ी की टिक-टिक की आवाज सुन रहा था कि अचानक ही गली में से गुजर रहे बैण्ड बाजे की आवाज ने घड़ी की टिक-टिक की आवाज को दबा दिया। तब मालिक ने अपने नौकर से कहा कि देखो कि घड़ी के बन्द होने का क्या कारण है। नौकर ने जाकर देखा तो घड़ी चल रही थी। वह इस राज को समझ गया और मालिक से जाकर कह दिया कि बाहर की बैण्ड बाजे की आवाज ने घड़ी की आवाज को दबा दिया था। ठीक इसी प्रकार मनुष्य के हृदय रूपी मकान में आत्मा रूपी घड़ी भी टिक-टिक कर रही है, किन्तु सांसारिक विषयों की ऊँची आवाज ने भीतर की आवाज को दबा रखा है, इसलिये मनुष्य अज्ञान के कारण बाहरी चमक-दमक से भीतर का आनन्द खो बैठता है।

जीवन एक अवसर है श्रेष्ठ करने का, श्रेष्ठ बनने का, श्रेष्ठ पाने का।

निभाना

जब हम किसी के साथ रिश्तों की खातिर उसके अनचाहे व्यवहार या अप्रिय बातों को सहन कर लेते हैं तो उसे निभाना कहते हैं। क्योंकि हम रिश्तों को खोना नहीं चाहते।

सामंजस्य के प्रयास - पहले तो हमारी कोशिश यही होती है कि हम बातचीत द्वारा अपनी इच्छाएं और अपने मन की भावनाएं उन्हें बता दें, उन्हें समझा दें, जिससे उनकी बातचीत और व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन हो जाए, किन्तु इसके बाद भी यदि कोई परिवर्तन नहीं होता है तो हम बेमन ही सही उनके अनुचित व्यवहार या बातों को बर्दाश्त कर लेते हैं।

मन पर प्रभाव - क्योंकि हमने उनके ग़लत व्यवहार को बर्दाश्त किया है और उनकी प्रकृति को सहज स्वीकार नहीं किया है इसलिए हमारे मन में अन्दर ही अन्दर उनके प्रति क्रोध या अप्रियता का भाव निरन्तर बना रहता है और इस तरह हम रिश्तों को ऊपरी तौर पर तो निभा लेते हैं लेकिन असलियत में हमारे ऐसे रिश्ते अर्थात् बेमन निभाते चले जाने वाले रिश्ते लगातार कमजोर होते चले जाते हैं।

व्या करें - हमें यह स्पष्ट रूप से समझ लेना होगा कि दूसरों पर हमारा नियन्त्रण कतई नहीं होता है और इसलिए उनकी स्वाभाविक प्रकृति को जान लेने के बाद हम उसको सहज में स्वीकार कर लें, यही एकमात्र उपाय होता है। यहाँ पर एक बात विशेष रूप से ध्यान देने की है कि किसी के ग़लत व्यवहार से हम अपने मन को प्रभावित नहीं होने देंगे और ऐसा कर पाना पूरी तरह हमारे नियन्त्रण में होता है।

मुझे जाँचना होगा कि अपने रिश्तों में मेरी सहज स्वीकार्यता है या सहन करने और निभाते चले जाने की भावना है?

- संजय अग्रवाल (नागपुर)

कोई भी जीवन में पीछे जाकर नई शुरूआत नहीं कर सकता, लेकिन कोई भी आज शुरूआत कर एक नए अन्त को अंजाम दे सकता है।
Nobody can go back and start a new beginning,
but anyone can start today and make a new ending.

स्नेह अनकहे शब्दों का वह संसार होता है जिसे
सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है।

आत्मबल विकास महाशिविर - 2023

(एक संक्षिप्त रिपोर्ट)

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का 173 वाँ शुभ जन्म-महोत्सव 16 से 20 दिसम्बर, 2023 तक बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ हरमिलाप धर्मशाला, साँकेत, रुड़की में 'आत्मबल विकास महाशिविर' के रूप में 'सत्यधर्म बोध मिशन' के तत्वावधान में मनाया गया।

महाशिविर के दौरान जो सकारात्मक वातावरण बना, उसमें परम पूजनीय भगवान् देवात्मा व अन्य सहायकारी उच्च आत्माओं की सूक्ष्म रूप में उपस्थिति स्पष्ट रूप से महसूस की गई। शिविर से पाए लाभों का वर्णन करना तो एक बहुत कठिन कार्य है, हाँ शिविर के मुख्य साधनों व अन्य कार्यक्रमों की एक संक्षिप्त झाँकी निम्न प्रकार रही-

तैयारियाँ- प्रत्येक महाशिविर की तैयारी पिछले महाशिविर के समाप्त होने के साथ ही शुरू हो जाती हैं। अतः महाशिविर 2023 की तैयारी भी महाशिविर 2022 के समाप्त होने के बाद से ही शुरू हो गई थीं। श्री राजेश रामानी जी लगभग पूरे वर्ष ही देश के विभिन्न शहरों और स्कूलों में जीवन विज्ञान की वर्कशॉप तथा नीति शिक्षा द्वारा भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करते रहे व साथ ही साथ लोगों को रुड़की महाशिविर में आने के लिए भी प्रेरित करते रहे। 'एक तोहफ़ा आज का' बुकलेट का वितरण भी स्कूलों में बच्चों को किया गया। इस काम में प्रत्येक नगर व गाँव में स्थानीय धर्मसाथियों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

नवम्बर व दिसम्बर माह की पत्रिका में महाशिविर की सूचना प्रकाशित की गई। दिसम्बर माह की पत्रिका का तो कवर पेज ही निमन्त्रण पत्र के रूप में छापा गया। धर्मसाथियों, श्रद्धालुओं व अन्य परिचित जनों को फ़ोन द्वारा भी सूचित किया गया। बहुत सुन्दर निमन्त्रण पत्र भी छपवाए गए व दूर के स्थानों पर डाक द्वारा व स्थानीय जनों को व्यक्तिगत रूप से वितरित किए गए।

श्री हरमिलाप धर्मशाला व अग्रवाल धर्मशाला की बुकिंग, हलवाई की बुकिंग, टेंट की बुकिंग व साउण्ड सिस्टम इत्यादि आवश्यक सामानों की बुकिंग की गई। पूरे देवाश्रम परिसर की सफ़ाई की गई। बिस्तरों को व्यवस्थित किया गया। ड्यूटियाँ बाँटी गई। इस प्रकार दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक महाशिविर की पूरी व्यवस्थाओं को अन्तिम रूप दे दिया गया।

इस संसार में न तो कोई अपने साथ कुछ लेकर आया है और
न ही अपने साथ कुछ लेकर जायेगा। इसलिये हमेशा खुश रहें।

आगमन - 11 दिसम्बर से ही धर्म सम्बन्धियों का आना शुरू हो गया था। भोपाल से श्रीमती भावना रामानी, मोगा से श्रीमती शशी गोयल, लुधियाना से श्रीमती सुदेश खुराना व श्री अशोक खुराना जी कई दिन पहले ही पधार गए थे। इस प्रकार धर्मसाथी आते गए और कारवाँ बनता गया। बाहरी व स्थानीय लगभग 300 जनों ने शिविर से साक्षात् लाभ उठाया। इनके भिन्न ऑनलाइन जूम के माध्यम से भी देश-विदेश में बहुत से जन लाभान्वित होते रहे। बाहर के स्थानों से पधारे जनों के शहरों के नाम व संख्या निम्न प्रकार रही - भोपाल (06), अम्बाला (06), फ़रीदाबाद (02), गुवाहटी (02), ग्वालियर (02), कांगड़ा (हिमाचल) (05), कपूरथला (05), लाडवा (05), लांझनी (हिमाचल) (04), लुधियाना (10), मुवाना (02), भूना (01), मोगा (06), दिल्ली (08), नोएडा (07), पंचकूला (04), सहारनपुर (09), सिरसा (05), सूरत (01), न्यू जर्सी (यू.एस.ए.) (04), वाराणसी (03), विकासनगर (03), बिजनौर (03), शादीपुर (03), कैथल (02), योल कैंट (01), चण्डीगढ़ (01), तिसंग (87), नारायणगढ़ (04), भायला (02), देहरादून (02), पदमपुर (02), नजीबाबाद (02), बेहट (05), जाटोवाला (01), फ़तेहपुर (02), हरिद्वार (02), संगरूर (05), मेरठ (02), हिसार (01) आदि।

महाशिविर का पहला दिन (16 दिसम्बर, 2023)

सायं 6:00 से 7:00 बजे - महाशिविर का प्रारम्भ परम पूजनीय भगवान् के लिए, महाशिविर के लिए व सभी के लिए शुभकामना के द्वारा किया गया। भजनों का गान भी किया गया। इसमें विशेष रूप से डॉ. नवनीत अरोड़ा जी व डॉ. सीमा शर्मा जी सेवाकारी रहे। इस सत्र में जब परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की देवानुरागमूलक शुभकामनाओं का गान देवशास्त्र खण्ड - III में से किया जा रहा था, तब एक विशेष वातावरण उपस्थित हो रहा था।

महाशिविर का दूसरा दिन (17 दिसम्बर, 2023)

प्रातः 9:00 से सायं 7:00 बजे - 'खुशहाल जीवन की समझ' विषय पर 'जीवन विज्ञान वर्कशॉप' का आयोजन किया गया। इसके चार सत्र रहे। पहले सत्र में 'मनुष्यों की समस्याओं', दूसरे सत्र में 'स्वयं से मुलाकात', तीसरे सत्र में 'जो प्राप्त है वही पर्याप्त है और चौथे सत्र में 'मनुष्य चार स्थितियों में जीता है' विषयों को

शिक्षा अगर व्यवहार, वाणी और बर्ताव में न दिखाई दे,
तो डिग्रियाँ केवल कागज़ के टुकड़े हैं।

विस्तारपूर्वक समझाया गया। इसमें श्री राजेश रामानी जी व डॉ. नवनीत जी ने बताया कि हमें हमारे भाव चलाते हैं। इन भावों से ही विचार बनते हैं। भाव उच्च होंगे तो, विचार भी उच्च होंगे और भाव निम्न होंगे, तो विचार भी निम्न होंगे और फिर उसके अनुसार भी हमारी क्रियाएं भी होंगी। इसलिए भाव को समझ पाना इस वर्कशॉप का उद्देश्य है।

महाशिविर का तीसरा दिन (18 दिसम्बर, 2023)

प्रातः 9:00 बजे - इस सत्र में 30 मिनट की एक फिल्म “चलो जीते हैं” दिखाई गई। इस फिल्म में दर्शाया गया कि ‘जीना उन्हीं का जीना है जो दूसरों के लिए जीते हैं।’ डॉ. नवनीत जी ने बताया कि हमें दूसरों की सेवा बिना नाम व प्रसिद्धि चाहे, निःस्वार्थ भाव से करनी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि चारों जगत् - भौतिक जगत्, वनस्पति जगत्, पशु जगत् व मनुष्य जगत् हमारे उपकारी हैं। हमें इनकी सेवाओं के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए और इनसे पाई सेवाओं के बदले में हमें भी कुछ न कुछ इनकी सेवा करनी चाहिए। इसके लिए उन्होंने अपने द्वारा लिखी चार पुस्तकों - ‘श्रद्धाभाव’, ‘कृतज्ञता’, ‘शुभकामना’ तथा ‘एक तोहफ़ा आज का’ को पढ़ने की सलाह दी।

सायं 5:00 बजे (साधन सत्र) - भगवान् देवात्मा जी की छवि के अर्चन, शुभकामना व भजनों के गान के बाद साधन के विषय ‘उच्च भावों के प्रेरक - देवात्मा’ पर बोलते हुए डॉ. नवनीत जी ने बताया कि देवात्मा का आविर्भाव हमारे हृदय की मलिनता को धोने के लिए हुआ है। उनके दर पर हम उच्च भाव अर्थात् आत्महित की इच्छा को लेकर आए हैं। देवात्मा की निकटता हमारे अन्दर उच्च भावों की प्रेरणा उत्पन्न करती है।

सभापति द्वारा भगवान् देवात्मा जी के जीवन की उच्च भावों से ओतप्रोत अनेक घटनाएं सुनाकर यह स्पष्ट किया गया कि भगवान् देवात्मा बाल्यकाल से ही ऐसी क्रियाएं करते थे जो उच्च भावों को प्रेरणा देती हैं। भगवान् देवात्मा अपने माता-पिता को अपना जन्मदाता, पालनकर्ता, रक्षाकर्ता व शिक्षादाता उपलब्ध करके उनके साथ अपना अति पवित्र व घनिष्ठ सम्बन्ध महसूस करते थे। भगवान् का सारा जीवन हमें उच्च भावों में जीने हेतु प्रेरित करता है।

आवाज ऊँची होगी तो कुछ लोग सुनेंगे, किन्तु बात
ऊँची होगी तो बहुत लोग सुनेंगे।

पुस्तक विमोचन - इस सत्र के अन्त में निम्न चार नई छपी पुस्तकों का विमोचन किया गया।

1. जीवन का सुनहरा दौर Graceful Ageing - यह 96 पृष्ठ की पॉकेट साइज पुस्तिका है (4000 प्रतियाँ)
2. मेरा लक्ष्य - क्या, क्यों और कैसे? - यह भी 96 पृष्ठ की पॉकेट साइज पुस्तिका है (4000 प्रतियाँ)
3. A Gift of 'Today' - यह 'एक तोहफ़ा आज का' नामक पुस्तक का अंग्रेज़ी संस्करण है (2000 प्रतियाँ)
4. 'एक तोहफ़ा अज दा' (यह 'एक तोहफ़ा आज का' नामक पुस्तक का पंजाबी संस्करण है) (2000 प्रतियाँ)।

बारी-बारी से उन धर्म सम्बन्धियों को स्टेज पर बुलाकर एक-एक पुस्तक का विमोचन करवाया गया, जो एक व दूसरे प्रकार से इन पुस्तकों को वर्तमान अवस्था तक लाने में सहयोगी प्रमाणित हुए हैं। नववर्ष 2024 के लिए बहुत सुन्दर कैलेण्डर भी जन सहयोग से Sponsorship लेकर छपवाये गये हैं तथा उनका भी लोकार्पण किया गया।

रात्रि 8:30 बजे - भजनों के गान का कार्यक्रम रखा गया। इसमें श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी, श्री विनोद गर्ग जी, श्रीमान् सोतम गुप्ता जी व अन्य धर्म सम्बन्धियों ने एक से बढ़कर एक उच्च भावों से ओतप्रोत सुन्दर भजनों का गान किया।

महाशिविर का चौथा दिन (19 दिसम्बर, 2023)

प्रातः 9:00 बजे (साधन सत्र) - भगवान् की छवि के अर्चन, दीप प्रज्वलन व भजनों के गान के बाद साधना के विषय 'मेरा धर्म और मैं' पर बोलते हुए देवात्मा जी के शिष्य और मिशन और मिशन के सदस्य वी. के. अग्रवाल जी ने बताया कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का जीवन बाल्यकाल से ही अनोखा था इसलिए वे जो भी बात कहते थे, वह भी अनोखी होती थी। धर्म के विषय में भी उन्होंने जो बताया वह भी अनोखा था। उन्होंने बताया कि 'धर्म आत्मा की उच्च अवस्था का नाम है और यह उच्च अवस्था उच्च भावों से आती है।' जिस जन का हृदय जितने उच्च भावों से भरा होगा, उसका हृदय उतना ही धर्मवान् होगा। उन्होंने यह भी बताया कि सच्चा धर्म

कितना आसान है किसी के सामने कोई उदाहरण पेश करना, पर कितना मुश्किल है स्वयं एक उदाहरण बनना। लेकिन है ज़्यादा प्रभावी।

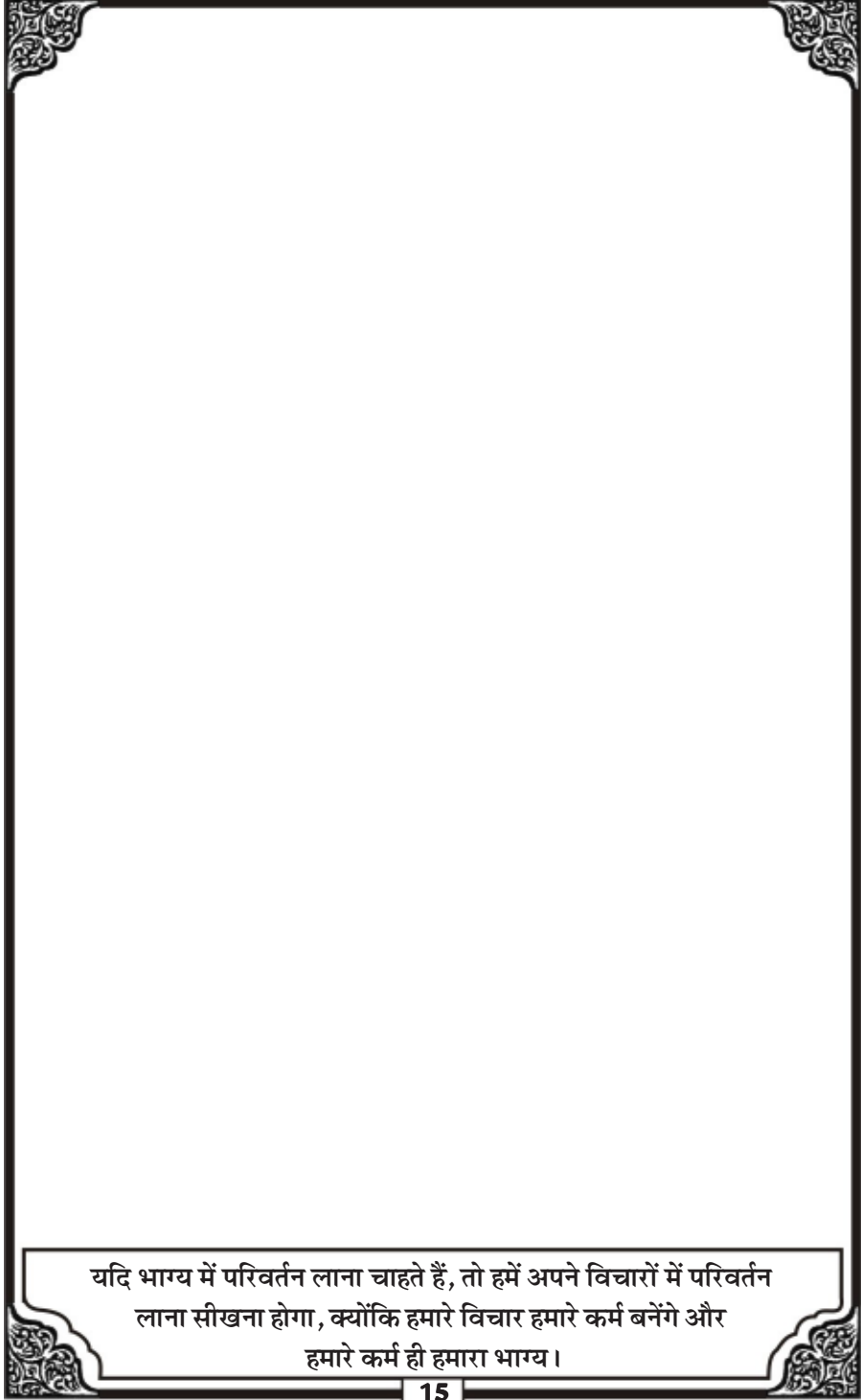
वह है, जो हमें हमारी आत्मा का सच्चा रूप दिखाता है, आत्मा के रोग दिखाता है, इन रोगों से होने वाले नुकसान के बारे में बताता है और फिर इस नुकसान से कैसे बचा जा सकता है तथा कैसे आगे का विकास सम्भव है, यह सब भी बताता है। इसलिए मेरा धर्म भी वही होना चाहिए, जो मेरे गुरु का धर्म है। मैं अपना मूल्यांकन करूँ कि मैं किस स्थिति में हूँ, कितना गम्भीर हूँ अपने गुरु की शिक्षाओं के प्रति हम सबका धर्म वही है जो हमारे गुरु का धर्म है। सबका शुभ हो। तदुपरान्त डॉ. नवनीत जी ने अपने बयान में 'सत्यधर्म' को बड़े सुन्दर शब्दों में और अधिक स्पष्ट व परिभाषित किया।

प्रातः 11:00 बजे - इस सत्र में दो कार्य किए गए एक विशुद्ध सेवा और दूसरा विश्वास चिकित्सा। विशुद्ध सेवा के लिए दो टीमें बनाई गई। एक टीम श्रीमान् विरेन्द्र डोगरा जी के नेतृत्व में स्थानीय गौशाला गई, जहाँ पशु जगत के लिए शुभकामना की गई व गायों को चारा खिलाया गया। दूसरी टीम श्रीमती अर्चना अरोड़ा के नेतृत्व में स्थानीय डिवाइन स्कूल गई और वहाँ वंचित समाज के पढ़ रहे बच्चों के लिए शुभकामना की गई और उन्हें स्वेटर व फल वितरित किए गए। विश्वास चिकित्सा में श्रीमान् कंवरपाल सिंह जी व श्रीमान् दिनेश उपाध्याय जी सहायक प्रमाणित हुए। इनके भिन्न दिल्ली हीलिंग सेण्टर से पधारी पूरी टीम सेवाकारी प्रमाणित होती रहीं।

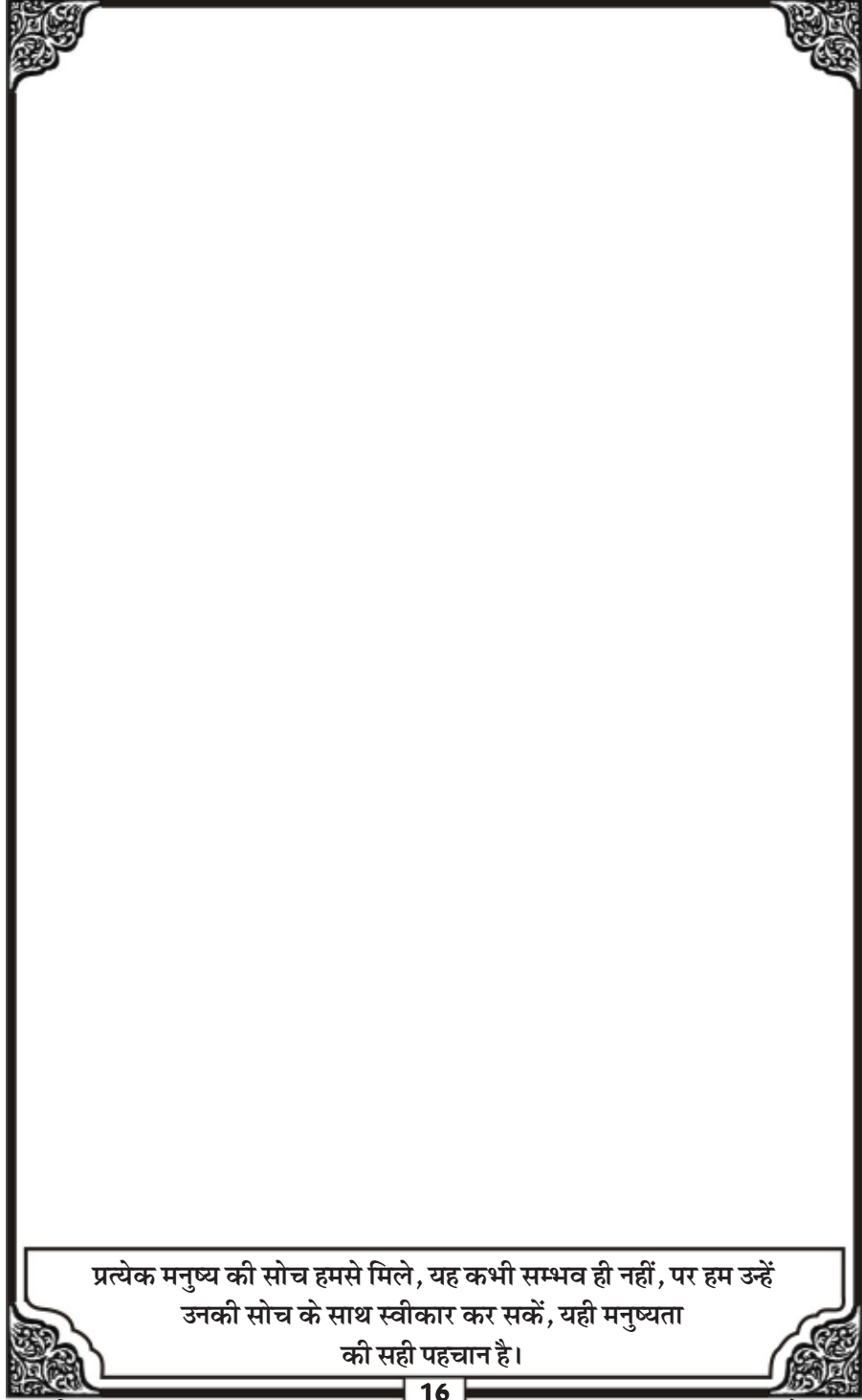
सायं 4:00 बजे (बालसभा) - इस सत्र का संचालन सुश्री अनिता जी, सुश्री नीना जी एवं श्रीमती पूनम जैन ने किया। बच्चों की इस सभा में गोपालपुर सरकारी स्कूल, भंगेड़ी सरकारी स्कूल, अनुश्रुति Academy for the deaf, IIT campus, Roorkee डिवाइन स्कूल, रुड़की; तिसंग आश्रम तथा धर्मसम्बन्धियों के बच्चों ने प्रतिभाग किया। बच्चों ने भजनों का गान, शुभकामना व सकारात्मक संदेश देने वाले लघु नाटक, नृत्य नाटिका व घटनाएं प्रस्तुत कीं, जिसका उपस्थित शिविरार्थियों ने तालियों के साथ स्वागत किया व बच्चों का उत्साहवर्धन किया। बच्चों को पुरस्कार भी दिए गए।

सायं 5:30 बजे (साधन सत्र) - भजनों के गान के बाद साधना के विषय 'सम्बन्धों में मिठास' पर बोलते हुए U.S.A से पधारे श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने बताया कि सम्बन्धों में मधुरता बनाए रखने के लिए जरूरी है कि हम दूसरों के गुण देखें, उन्हें सराहें तथा माफ़ी माँगना, माफ़ करना व भूलना भी सीखें।

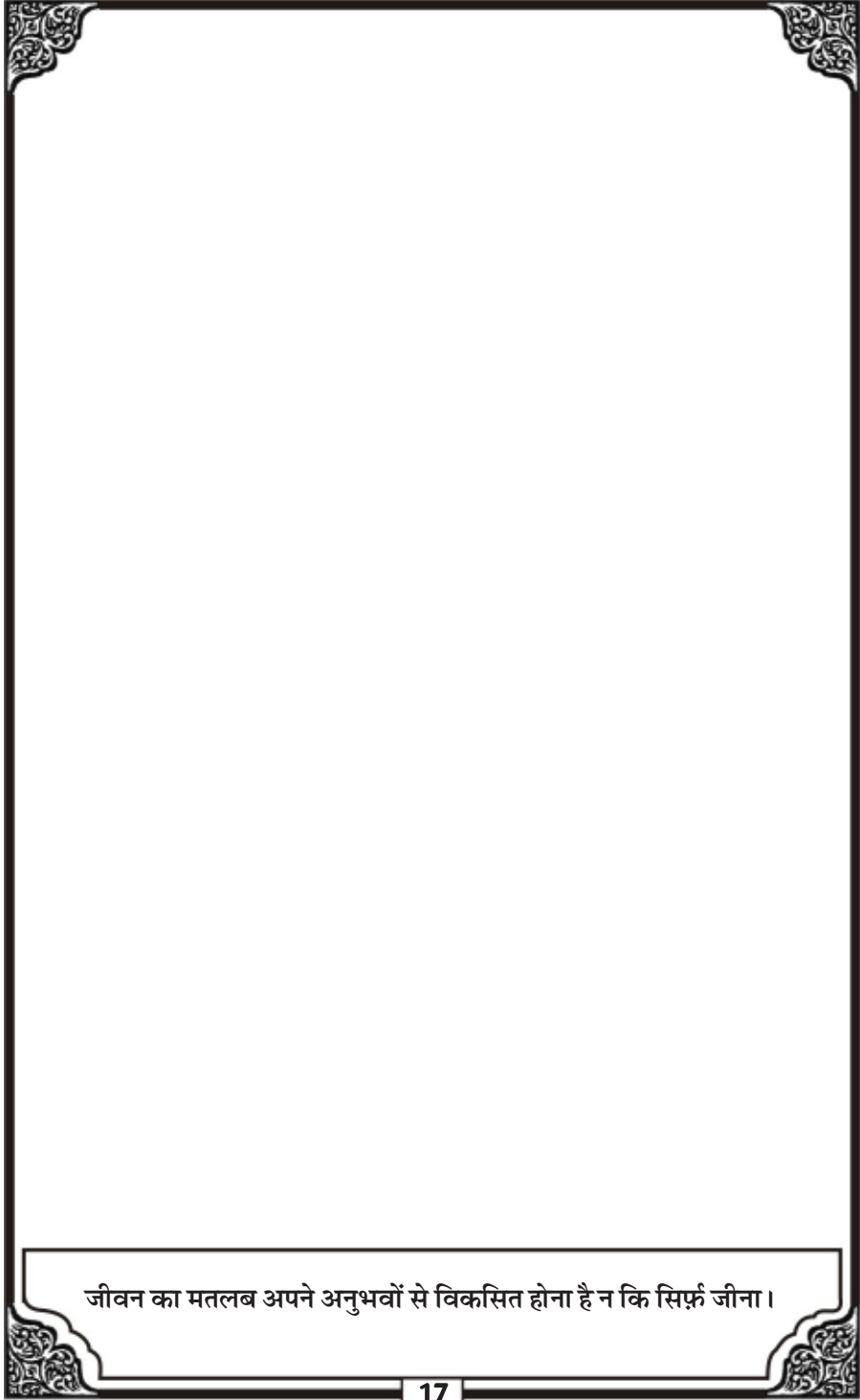
मनुष्य घर बदलता है, कपड़े बदलता है, रिश्ते बदलता है, मित्र बदलता है,
प्यार बदलता है, फिर भी दुःखी क्यों रहता है क्योंकि वह स्वयं
को नहीं बदलता है।



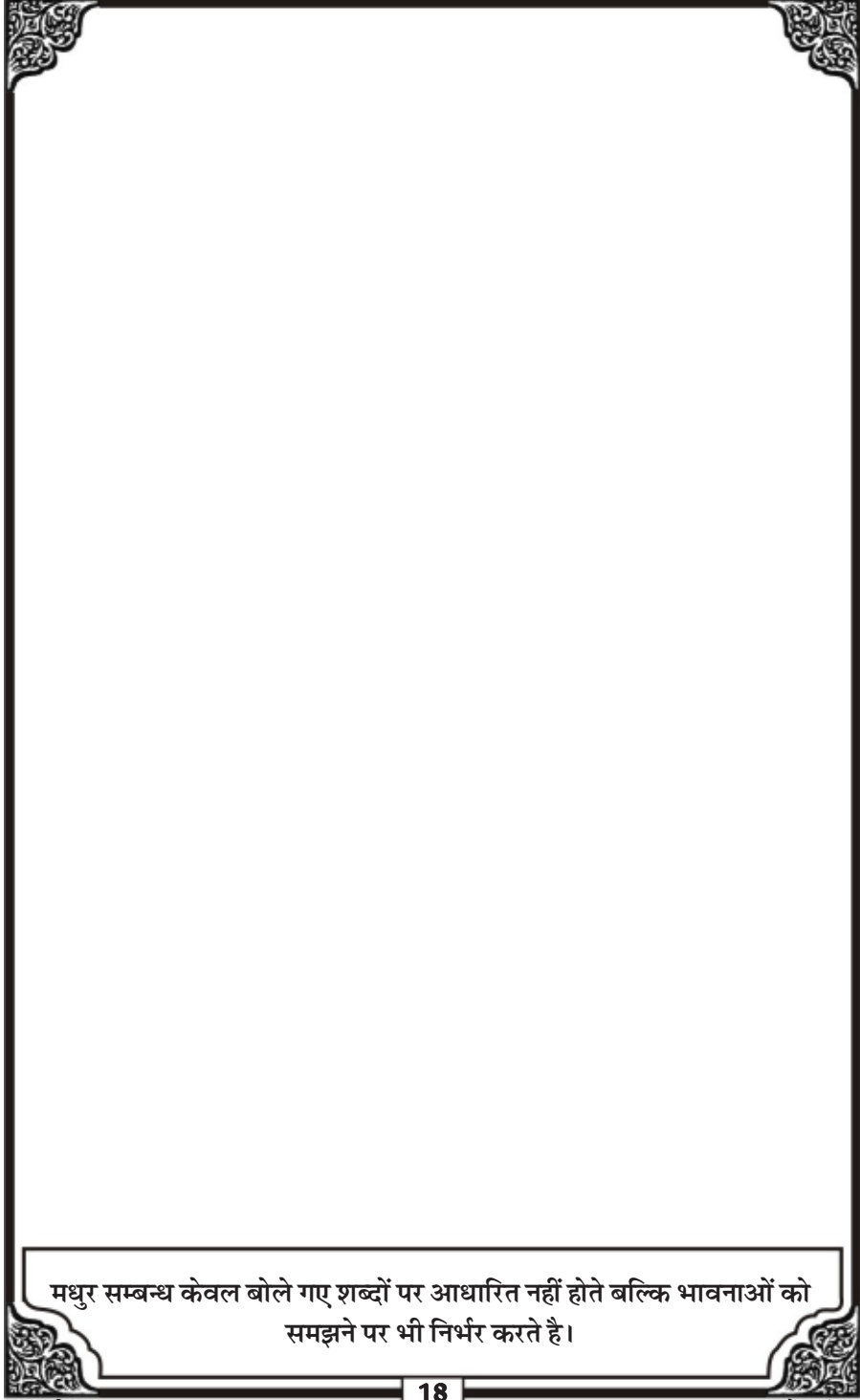
यदि भाग्य में परिवर्तन लाना चाहते हैं, तो हमें अपने विचारों में परिवर्तन लाना सीखना होगा, क्योंकि हमारे विचार हमारे कर्म बनेंगे और हमारे कर्म ही हमारा भाग्य।



प्रत्येक मनुष्य की सोच हमसे मिले, यह कभी सम्भव ही नहीं, पर हम उन्हें
उनकी सोच के साथ स्वीकार कर सकें, यही मनुष्यता
की सही पहचान है।



जीवन का मतलब अपने अनुभवों से विकसित होना है न कि सिर्फ जीना।



मधुर सम्बन्ध केवल बोले गए शब्दों पर आधारित नहीं होते बल्कि भावनाओं को समझने पर भी निर्भर करते हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि चारों जगत् भौतिक जगत्, वनस्पति जगत्, पशु जगत्, मनुष्य जगत् हमारे उपकारी हैं। हम मनुष्य भौतिक जगत्, वनस्पति जगत्, पशु जगतों के ऊपर निर्भर हैं जबकि ये तीनों मनुष्य के ऊपर निर्भर नहीं हैं इसलिए हमें इन तीनों की सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा ने 16 सम्बन्धों की शिक्षा दी है, हमें इन सभी में सामन्जस्य बैठाकर रखना है। परिवार सम्बन्धों की इकाई है। परिवार में ही स्वर्ग है और परिवार में ही नर्क है। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखने के लिए हमें अपने अहम् को घटाना पड़ेगा। विवाद की स्थिति में बात को कल पर टाल दें। विवेक का प्रयोग करेंगे तो सम्बन्धों में मिठास ही मिठास रहेगी।

रात्रि 8:30 बजे - इस सत्र में आने वाले वर्ष 2024 के लिए कार्य योजना पर चर्चा हुई और यह तय किया गया कि आगे कैसे कार्य करना है? इस हेतु धर्म साथियों ने कई हितकर संकल्प ग्रहण किए।

महाशिविर का समापन दिवस -

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का शुभ जन्मदिन
(20 दिसम्बर, 2023)

प्रातः 6:00 बजे - भगवान् देवात्मा का जन्मदिवस मनाने के लिए धर्मशाला के प्रांगण में एक विशेष मंच बनाया गया, जिस पर खड़े होकर धर्मसम्बन्धी बारी-बारी से भजनों का गान कर रहे थे तथा शेष धर्मसाथी उनको दोहरा रहे थे। धर्मसम्बन्धी अपने ठहरने के स्थानों से सुन्दर वेशभूषा में तैयार होकर पंक्तिबद्ध होकर एकत्र हो रहे थे। सभी एक-दूसरे को गले मिलकर व हाथ जोड़कर भगवान् के जन्मदिन की बधाई दे रहे थे। सबके हाथों में भगवान् की छवि के अर्चन के लिए फूलमालाएं थीं और 'भगवान् देवात्मा की जय' के नारे लगा रहे थे। कुछ धर्मसाथी नृत्य करके अपनी खुशी का प्रकाश कर रहे थे।

ठीक सात बजकर दस मिनट पर घड़ियाल और शंख ध्वनि के द्वारा भगवान् देवात्मा की जन्मवेला की सूचना दी गई और 'प्रगटे देवगुरु भगवान् जीवन ज्योति देने वाले' भजन का गान शुरु हो गया। 'भगवान् देवात्मा की जय' के नारों से पूरा प्रांगण

एक जादू सा होता है माँ और बच्चे के रिश्ते में। आगे बच्चा बढ़ता है
और सिर माँ का ऊँचा होता है।

गूँज उठा। इसके बाद श्रीमान् अशोक रोचलानी जी ने भगवान् की जन्मवेला की विशेषता व इससे हमारे जीवनों का जो सम्बन्ध है, उस पर भावपूर्ण सम्बोधन दिया तथा सभी को भगवान् के जन्मदिन की बधाई दी।

इसके बाद सभी धर्मसम्बन्धी कतारबद्ध होकर साधन हाल में प्रवेश करने लगे और अपनी बारी आने पर भगवान् की छवि का फूल-मालाओं से अर्चन करने लगे। सबसे पहले भगवान् के जन्म स्थान श्री अकबरपुर से पधारी डॉ. मीनाश्री शास्त्री जी ने अर्चन किया और उसके बाद अन्य धर्मसम्बन्धियों ने। इस अवसर पर कुछ धर्मसम्बन्धी कतार के दोनों ओर खड़े होकर 'शुभ हो - शुभ हो', 'भगवान् के जन्मदिन की बधाई हो!' कहकर सभी का स्वागत कर रहे थे। 'शुभकामना गीत' की मधुर-मधुर धुन कानों में अमृत घोल रही थी। पूरा दृश्य किसी स्वर्गीय अनुभूति से कम नहीं था।

इस अवसर पर श्रीमती पूनम जैन और उनका परिवार प्रतिवर्ष की भाँति पंचमेवा का प्रसाद सभी को वितरित कर रहा था। इस अवसर के लिए विशेष रूप से बनवाया गया मिशन के त्यौहारों को दर्शाने वाला नववर्ष 2024 का कैलेण्डर सभी को दिया गया।

प्रातः 9:00 बजे (साधना सत्र) - भगवान् देवात्मा जी की छवि के अर्चन, दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् 'अद्वितीय है रूप तुम्हारा जन समाज में हे भगवन्' के पद वाला भजन श्री विनोद गर्ग जी ने गाया। देव स्तोत्र का गान श्रीमती सीमा शर्मा जी ने किया तथा उसकी व्याख्या श्रीमान् चन्द्रगुप्त जी ने की। तत्पश्चात् भोपाल से पधारी सुश्री नैनी टहिलरामानी जी ने विशेष दिन का सम्बोधन दिया व भगवान् के जन्मदिन की सभी को शुभकामनाएं दी। उन्होंने उन लोगों के लिए भी शुभकामना की जो अभी तक भगवान् की शिक्षाओं से लाभ नहीं उठा सके ताकि भविष्य में वे भी लाभान्वित हो सकें। इसके बाद श्री विनोद गर्ग जी ने 'अद्वितीय जीवनव्रतधारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी' भजन का गान किया।

उसके आगे साधना के विषय 'देवात्मा का जीवनव्रत तथा वर्तमान में उसका महत्त्व' पर बोलते हुए डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने बताया कि देवात्मा का आविर्भाव आत्मिक रूप से अन्धों को आत्मिक रोशनी देने के लिए हुआ है। देवात्मा अपने शिष्यों को परोपकारी व धर्मवान् बनाना चाहते हैं। देवात्मा का यह दृढ़ विश्वास था कि नेचर के विकासकारी प्रबन्ध के अनुसार उन्हें (देवात्मा को) ऐसे इन्सान जरूर मिलेंगे, जो

भलाई करते रहिए बहते पानी की तरह बुराई खुद ही किनारे
लग जायेगी कचरे की तरह।

अपने व दूसरों के आत्मिक हित के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर सकेंगे। उन्होंने आगे बताया कि भगवान् देवात्मा की शिक्षाएं केवल मनुष्यों के साथ सम्बन्ध के लिए ही ज़रूरी नहीं, वरन् इस सृष्टि के प्रत्येक अस्तित्व - भौतिक जगत्, वनस्पति जगत् व पशु जगत् के सम्बन्ध के लिए भी ज़रूरी हैं। संसार की समस्त समस्याएं देवात्मा की शिक्षाओं के परिप्रेक्ष्य में हल की जा सकती हैं, इसलिए वे आज भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं जितनी पहले थी।

प्रातः 11:00 बजे - शिष्य/शिष्याओं का ग्रहण

इस अवसर पर निम्न 10 जनों को मिशन का सदस्य व भगवान् देवात्मा जी का शिष्य/शिष्या ग्रहण किया गया। इन सबका परिचय डॉ. नवनीत जी ने करवाया तथा इन सबको सुश्री अनिता जी ने शपथ दिलवाई। श्रीमान अशोक रोचलानी जी व सुश्री नीना जी ने माल्यार्पण कर उन्हें शुभकामनाएं दी तथा मिशन में उनका स्वागत किया। इस अवसर पर निम्न जनों को शिष्य/शिष्या ग्रहण किया गया -

1. कुलभूषण शर्मा सुपुत्र श्री जगपत राय शर्मा (देहरादून)
2. लीलाधर सुपुत्र श्री टोपन दास (संगरूर, पंजाब)
3. नारायण सिंह सुपुत्र श्री बहादुर चन्द (कपूरथला)
4. देवराज अरोड़ा सुपुत्र श्री रामपाल (लुधियाना)
5. श्रीमती रजनी धर्मपत्नी श्री शिव कुमार (रुड़की)
6. श्री सुभाषचन्द सुपुत्र श्री बूटा राम (परसेल, शाहपुर, कांगड़ा)
7. श्री सौराज सिंह सुपुत्र श्री आशा राम (खुजैड़ा, तिसंग, मुजफ्फरनगर)
8. श्री सहेन्द्रपाल सुपुत्र श्री बलजीत सिंह (मेहलकी, मुजफ्फरनगर)
9. श्री कृष्णपाल सुपुत्र श्री सुनहरा सिंह (खेड़ी सुरेश, तिसंग, मुजफ्फरनगर)
10. श्रीमती ममतेश धर्मपत्नी श्री प्रवेश कुमार (तिसंग, मुजफ्फरनगर)

दोपहर 12:00 बजे (समापन सत्र) - मिशन की गतिविधियों व शिविर के खर्चों के लिए शिविरार्थियों ने दिल खोलकर दान दिया। शिविर का सारा खर्च दान से पूरा हुआ। सबसे अन्त में देवारती का गान और जयध्वनि की गई। इस प्रकार अगले वर्ष फिर मिलने की कामना के साथ इस अति हितकर शिविर का समापन हुआ।

सफलता जिस ताले में बन्द रहती है वह दो चाबियों से खुलती है एक कठिन परिश्रम और दूसरा दृढ़संकल्प।

तृष्णा

एक सेठ शहर के बाहर संतों की कुटिया में उनसे मिलने उनके प्रवचन सुनने जाते। महाराज के प्रवचन अति रोचक और प्रेरणादायक होते थे।

एक दिन सेठ जी प्रवचन सुन रहे थे। विषय था - तृष्णा। महाराज फ़रमा रहे थे, “जब एक हुआ तो दस होते, दस हों तो सौ की इच्छा है। सौ पाकर भी संतोष नहीं, अब शान्त रहो, तो अच्छा है।”

सेठ जी ने गुरु महाराज जी से कहा, “महाराज आपके सामने, गुरुजनों के सामने बैठकर मैं मिथ्या नहीं कहता, “मैंने तृष्णा देखी ही नहीं। अगर है तो मुझे दिखाइए न।”

महात्मा कहने लगे, “दिखाएंगे। तृष्णा सर्व पापों का मूल है।” बाबा जी ने एक कुत्ते का पिल्ला लिया। उसके गले में सोने का पट्टा और उसमें एक हीरा जड़वाया और मामूली सी संगली डालकर अपने पलंग के साथ बाँध दिया। संगत भी प्रवचन सुनने आईं और वह सेठ भी आया। सेठ ने देखा कि कहाँ गुरु महाराज, विद्वान पढ़े-लिखे और कहाँ अपनी चारपाई से कुत्ता बाँध रखा है।

संगत चली गई तो सेठ ने पूछा, “महाराज! आपने साधु होकर यह क्या किया है? यह जो कुत्ते के गले में पट्टा है न, यह हम सबकी बेइज्जती है। लोग हमें कहेंगे कि आपके गुरु के पास कुत्ता तो है किन्तु उसका पट्टा कितना निकम्मा है और संगली भी कितनी गन्दी है। महाराज यह सेवा मुझे दे दें। मैं सुन्दर पट्टा भी ले आऊँगा और अच्छी सी संगली भी।”

महाराज ने देखा कि सेठ जी की नजर तो पट्टे पर है। वह कहने लगे, “नहीं भाई, हम साधु हैं। यह सादा पट्टा व संगली ही अच्छी है।” सेठ जी भी कहा मानने वाले थे। बोले, “महाराज! आप तो साधु हैं, मुँह तो हमारा काला होना है कि आपके गुरु महाराज ने इतना गन्दा पट्टा-चेन कुत्ते को डाल रखा है। आप यह सेवा मुझे अवश्य दे दें, क्योंकि हम आपको गुरु मानते हैं।” महात्मा बोले, “सोच लो। हमारी एक शर्त है कि जो इसका पट्टा और जंजीर बदलेगा, वह कुत्ते के साथ बैठकर खाएगा।”

सेठ जी बोले, “महाराज तुहाडे कुत्ते दा झूठा। मेरे... भाग न जाग जाएं। अगर में कुत्ते का झूठा खा लूं। मैं खुद को भाग्यशाली समझूँगा।” महात्मा कहने लगे, “कोई बात नहीं। आप पट्टा और संगली तैयार करवा के ले आना, मैं खाना तैयार करवा दूँगा।”

सेठ जी पट्टा और जंजीर तैयार करवा कर ले आए। जब सारी संगत चली

जिन्दगी में आई अड़चनें आपको अपनी नई शक्तियों को खोजने का मौका देती हैं और यहीं शक्तियाँ आपकी हिम्मत बनती हैं।

गई तो एक थाली में कुत्ते के लिए खाना भी आ गया। सेठ जी ने सोचा, चलो कोई डर नहीं, लाखों का हीरा हाथ लग रहा है। एक ओर कुत्ता खाएगा, दूसरी ओर मैं खाऊँगा। यहाँ कौन देख रहा है। गुरु महाराज और मेरे सिवा इस बात को कोई और जानता ही नहीं। गुरु जी ने कुत्ता छोड़ दिया, सेठ जी जब ग्रास मुँह में डालने लगे तो गुरुदेव ने हाथ पकड़ लिया और बोले, “बेटा रहने दो, कुछ पता चला?”

सेठ जी बोले, “जी, कैसा पता गुरुदेव।” गुरुदेव मुस्कराते हुए बोले, “आपने बोला था कि तृष्णा कैसी होती है? आप मुझे गुरु कहकर बेवकूफ बनाते हो। याद रख तेरी दृष्टि हीरे पर है। करोड़ों का मालिक होकर भी तू कहता है तृष्णा कैसी होती है। मैं तुम्हें तो पहले ही कहता था कि सबसे तृष्णा वाला तू है। एक हीरे की प्राप्ति के लिए तुम कुत्ते का झूठा खाने को तैयार हो गए हो, बताओ तृष्णा का कौन सा रूप देखना चाहते हो?” सेठ लज्जित होकर बाहर निकल गया।

यदि ज़िन्दगी की कदर है

एक सेवक लिखते हैं -

मैं माननीय पिता जी कोई सेवा करता हूँ तो वह बहुत धन्य-धन्य अनुभव करते हैं। परसो उनकी सेवा में कुछ शब्द लिखे थे। सम्मान के योग्य भाई....साहब कल कंथला से लुखी आए थे। मुझे खासतौर से मिले। उन्होंने कहा कि - भाई, आपके माननीय पिता जी तो आपके कुछ शब्द पढ़कर ऐसे प्रभावित हुए कि वह हाथ जोड़कर फरमाते थे कि धन्य हैं तुम्हारे सत्गुरु जी जिन्होंने अपने प्रभावों और धर्मसम्बन्धियों की उच्च संगत प्रदान करके मेरे बेटे को इतना योग्य और श्रद्धावान् बना दिया है कि जिसकी महिमा मैं गा नहीं सकता।कौनसी मुबारिक घड़ी थी कि आपने अखबार 'सत्य देव संवाद' जारी कराया था।" उनकी यह गहरी इच्छा है और उनकी अपने पोतों और अन्य सब सम्बन्धियों को यह आखिरी नसीहत है कि यदि ज़िन्दगी की कदर चाहते हो तो भागकर देवात्मा के किले में महफूज हो जाओ, वरना सामने मौत का तूफान है। यह है परम पूजनीय सत्गुरु के असरों का चमत्कार। माननीय पिता जी का रोम-रोम शहादत देता है। मेरे परिवर्तन से वह बहुत प्रभावित हो चुके हैं। मेरा हर एक सम्बन्ध बहुत बेहतर हो गया है। विशेषकर माननीय पिता जी जो इतने प्रभावित हो चुके हैं कि सत्गुरु जी की महिमा की गीत गाते हैं और कहते हैं कि ऐसे लासानी सत्गुरु धन्य हैं! धन्य हैं!!

जीवन में कभी उन पर ध्यान मत दीजिए जो पीठ पीछे आपकी ग़लतियाँ गिनते हैं
बल्कि उन पर गौर कीजिए जो आपके सामने आपकी
अच्छाई और बुराई बताते हैं।

गुड़ (स्वास्थ्य)

1. गुड़ शरीर में डाइजेस्टिव एंजाइम्स को सक्रिय करता है। आँतों को सुचारु रूप से काम करने में मदद करता है, जिससे कब्ज की समस्या दूर होती है।
2. यह शरीर में मौजूद नुकसानदायक टॉक्सिन्स को बाहर निकालकर लिवर की सफाई करता है। शरीर को डिटॉक्स करना चाहते हैं, गुड़ ज़रूर खाएं।
3. शरीर में खून की कमी नहीं होती, क्योंकि गुड़ आयरन का प्रमुख स्रोत है। यह रक्त में हिमोग्लोबिन के टोटल काउंट को भी बढ़ाता है।
4. इससे खून साफ़ होता है। इसका कम मात्रा में प्रतिदिन सेवन करने से रक्त साफ़ होता है, जो शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है।
5. सर्दी-जुकाम होने पर गुड़ को गर्म पानी में मिलाकर पिएं। चाहे तो चाय में चीनी की बजाय गुड़ डालें। तासीर में गर्म गुड़ सर्दी-जुकाम में आराम देता है।
6. इसमें भरपूर मात्रा में एंटी-ऑक्सीडेंट्स और मिनरल जैसे जिंक एवं सेलेनियम मौजूद होते हैं, जो फ्री-रैडिकल को क्षतिग्रस्त होने से रोकता है।
7. यदि जोड़ों में दर्द होता है, तो गुड़ को अदरक या एक गिलास दूध के साथ खाने से दर्द में छुटकारा मिलता है। इससे हड्डियाँ मजबूत होने के साथ-साथ अर्थराइटिस भी नहीं होता है।
8. गुड़ एक कॉम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट है, जो शरीर को धीरे-धीरे, लेकिन लम्बे समय तक के लिए ऊर्जावान बनाए रखता है। शुगर का स्तर जल्दी नहीं बढ़ता है।
9. इसके सेवन से साँस से सम्बन्धित समस्याओं जैसे अस्थमा, ब्रोनकाइटिस से बचाव होता है। तिल के साथ इसे खाने से श्वसन प्रणाली को लाभ होता है।
10. पीरियड्स में होने वाले दर्द, क्रेंप्स, मूड स्विंग्स से बचने के लिए गुड़ खाएं। यह एन्डॉर्फिन्स रिलीज करता है, जो शरीर को आराम पहुँचाता है।
11. कील-मुहांसे एवं एक्ने की समस्या भी दूर करता है। गुड़ खून से टॉक्सिन दूर करता है, जिससे त्वचा दमकती है। मुहांसों से भी छुटकारा मिलता है।
12. कभी गला बैठने के साथ-साथ आवाज जकड़ जाए, तो पके हुए चावल में गुड़ मिलाकर खाने से बैठा हुआ गला ठीक होता है। आवाज भी खुल जाती है।
13. गुड़ खाने से याद करने की क्षमता भी विकसित होती है। इसका नियमित रूप से सेवन करने से दिमाग लम्बी उम्र तक सक्रिय बना रहता है।
14. इसे एक बेहतर मूड बूस्टर भी माना गया है। इसके अलावा माइग्रेन की समस्या में भी गुड़ फायदा पहुँचाता है।

औरों से पहले खुद की खुशी की ज़िम्मेदारी लीजिए क्योंकि आप ही वो व्यक्ति हैं, जिसके साथ आप सबसे ज़्यादा समय बिताते हैं।

15. जिनका वजन अधिक है, उन्हें भी इसका सेवन करना चाहिए। यह शरीर में जल की अवधारणा को कम करके शरीर के वजन को नियन्त्रित करता है।

- साभार अमर उजाला

मौसम की सब्जी - बहुमुखी मूली

प्रकृति ने हर मौसम में हमारे लिए ऐसे फल और सब्जियाँ दी हैं जो मौसम के अनुसार हमारे स्वास्थ्य और सौन्दर्य को बनाए रखने में सक्षम हैं। सर्दी की ऋतु में आसानी से उपलब्ध मूली का प्रयोग सलाद के रूप में अधिकांश घरों में किया जाता है। मूली का रंग सफेद होता है। पर यह चेहरे को लालिमा प्रदान करती है। मूली और इसके पत्ते भोजन पचाने में बहुत उपयोगी होते हैं। वैसे तो मूली का प्रयोग पराठे, रायता, सब्जी, अचार तथा भुजिया बनाने के लिए भी किया जाता है।

प्रतिदिन एक मूली खाने से मनुष्य स्वस्थ रह सकता है। इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, गन्धक, आयोडीन तथा आयरन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इसमें सोडियम, फास्फोरस, क्लोरीन तथा मैगनीशियम भी पाया जाता है। इसमें विटामिन ए.बी.सी. पर्याप्त मात्रा में है। सामान्यतः हम मूली खाकर पत्तों को फेक देते हैं। परन्तु यह वात, पित्त, कफ तीनों रोगों को दूर करता है। अजीर्ण के लिए तो मूली रामबाण है। सलाद में नमक के साथ मूली, टमाटर, ककड़ी का मिश्रित सलाद गुणकारी है। कुछ अनुभूत प्रयोग भी आजमाएँ -

1. अम्लपित्त (हाइपर एसिडिटी) के लिए ताजी मूली मिश्री के साथ खाने से लाभकारी होता है।
2. पीलिया और लीवर रोग में कच्ची मूली का सेवन करने से मूत्र से विजातीय तत्व निकल जाते हैं।
3. मूली शरीर के कार्बन डाइऑक्साइड निकलकर ऑक्सीजन प्रदान करती है।
4. दाँतों को मजबूती, हड्डियों को शक्ति प्रदान करती है।
5. मूली के सेवन से पेट के कीड़े निकल जाते हैं।
6. उच्च रक्तचाप नियन्त्रण, हृदय रोग में शान्ति, मूत्र रोगों में लाभकर है।
7. मूली, नींबू का रस नमक के साथ लेने से शरीर का मोटापा कम होता है।
8. मूली रक्त शोधक है। खुश्की दूर करे, झाड़ियाँ, कील मुहांसे दूर करे तथा रक्त शुद्ध होता है।

मेरी काबिलियत हर मुश्किल पर भारी है क्योंकि
जी-तोड़ मेहनत मेरी वफादारी है।

विजिट व प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा

पिछले दिनों प्रो. नवनीत अरोड़ा जी निम्न प्रकार से विजिट व प्रेरणास्पद उद्बोधनों द्वारा सेवाकारी बने -

दिल्ली - 30 दिसम्बर, 2023 को साँकेत, दिल्ली में उन्होंने अपने मौसा श्री नारायण सिंह जी नागपाल (93 वर्षीय) से मुलाकात की, जो वर्षों से मिशन के लिए सहयोग राशि भेजकर सेवाकारी हो रहे हैं।

नोएडा - 30 दिसम्बर, 2023 को Noida Institute of Engineering and Technology (NIET) में Stress Management विषय पर उद्बोधन दिया। इससे अच्छी संख्या में PG Students एवं कुछ शिक्षक लाभान्वित हुए। मिशन के सदस्य डॉ. विवेक तथा डॉ. हितेश जी ने यह सत्र रखवाया। मिशन के सदस्य डॉ. नवीन कुमार (IIT Delhi) भी इस सत्र से लाभान्वित हुए।

देहरादून - (1) 28 दिसम्बर, 2023 को अपनी बचपन की अध्यापिका सुश्री विनोद मैडम से मुलाकात की, जिनसे 44 वर्ष पूर्व देव समाज स्कूल, अम्बाला शहर में विद्या ग्रहण की थी।

(2) 4 दिसम्बर, 2023 को धर्मसाथी श्री कुलभूषण शर्मा जी (देहरादून) के निवास पर सपलीक विजिट किया। उनकी सुपुत्री व उनके परिवार संग प्रायः दो घण्टे तक हितकर बातचीत की।



F.R.I Dehradun में उद्बोधन के दौरान का दृश्य

(3) 5 दिसम्बर, 2023 को Forest Research Institute (F.R.I) Dehradun में Indian Council of Forestry Research and Education (I.C.F.R.E) के नये भर्ती हुए Scientists के लिए चल रहे Orientation Programme में डॉ. नवनीत

फैसले और फासले में एक बड़ा अन्तर यह है कि मन की बात कह दो तो फैसले हो जाते हैं और मन में बात रख लो तो फासले हो जाते हैं।

अरोड़ा जी ने प्रायः तीन घण्टे तक उद्बोधन दिया। विषय था - Organisational Behaviour, Leadership and Motivation. प्रायः 37 युवा वैज्ञानिक लाभान्वित हुए। उन्हें मिशन की पॉकेट बुक्स वितरित की गई। बहुत प्रभावशाली वातावरण बना। इस सत्र में शामिल होकर डॉ. सीमा शर्मा, श्री कुलभूषण शर्मा व उनके दामाद संजय जी भी लाभान्वित हुए।



F.R.I Dehradun में उद्बोधन उपरान्त प्रतिभागियों के संग

रुड़की - 9 जनवरी, 2024 को Continuing Education Center, IIT Roorkee में उड़ीसा से आये हुए प्रायः 30 इंजीनियर्स को 'Human Behaviour' विषय पर सम्बोधित किया। संस्थान (Better Life) द्वारा प्रकाशित पॉकेट बुक्स का सेट प्रत्येक प्रतिभागी को दिया गया। बहुत अच्छा वातावरण बना। प्रो. दीपक खरै जी ने यह सत्र रखवाया। इसी प्रकार अन्य सत्र 22 जनवरी, 2024 को सम्पन्न हुआ, जिससे 20 प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

लौंगोवाल (पंजाब) - 12 जनवरी, 2024 को संगरूर के निकट Sant Longowal Institute of Engineering and Technology में Research Scholars, Teachers व Staff को 'Excellence in life' विषय पर सम्बोधन दिया। प्रायः 50 जन लाभान्वित हुए। श्री हर्ष कुमार जी एवं श्री कनिष्क अरोड़ा जी संगरूर से साथ गए तथा लाभ उठाया। 440/- पुस्तकें उपस्थित जनों ने खरीद की। यह सत्र संस्थान के निदेशक प्रो. मनीकान्त पासवान जी ने प्रो. अमनदीप शाही जी (Head, Mechanical Engineering Deptt) की मदद से रखवाया।

कोई भी मंज़िल तब तक ही कठिन लगती है, जब तक हम उसकी तरफ़ चलना शुरू नहीं करते।



SLIET, लौंगोवाल में उद्बोधन उपरान्त प्रतिभागियों के संग

कुरुक्षेत्र - 15 जनवरी, 2024 को National Institute of Technology, Kurukshetra के Computer Science Department में पी.एच.डी/एम टैक/बी टैक के विद्यार्थियों को प्रेरणास्पद उद्बोधन दिया। विषय था - Quality Life Management. प्रभावशाली वातावरण बना। प्रायः 100 विद्यार्थी व कुछ प्रोफेसरस लाभान्वित हुए। एक पी.एच.डी. Viva Exam के सिलसिले में डॉ. नवनीत जी गए हुए थे। यह सत्र Indian Knowledge System के Professor-in-change प्रो. राजेश अग्रवाल जी ने रखवाया तथा प्रायः 2000/- की पुस्तकें भी खरीद की।



NIT, Kurukshetra में उद्बोधन उपरान्त प्रतिभागियों के संग

रुड़की - 16 जनवरी, 2024 को Deptt. of Management Studies, IIT Roorkee में विभिन्न कम्पनियों के मैनेजरस को Quality of Life विषय पर उद्बोधन दिया। प्रायः 20 जन लाभान्वित हुए। विभागाध्यक्ष प्रो. रजत अग्रवाल जी के द्वारा यह सत्र रखवाया गया तथा 4000/- पुस्तकें भी प्रतिभागियों को दी गई। सबका शुभ हो!

ज़िन्दगी की किताब का नया पन्ना खुल चुका है, जागो और इस पन्ने पर
एक और खूबसूरत कहानी लिख दो।

शोक समाचार

शोक का विषय है कि पुराने सामाजिक परिवार श्री हरभगवान भुटानी जी के बड़े सुपुत्र श्री सुरेन्द्र भुटानी जी (देहरादून) का 9 नवम्बर, 2023 को 82 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। उनके पारिवारिक जनों ने बड़े श्रद्धाभाव से मिशन हेतु 5000/- दानस्वरूप भिजवाये। तदुपरान्त 28 दिसम्बर, 2023 को डॉ. नवनीत जी ने इस परिवार के यहाँ विजिट किया व हितकर बातचीत की। पारिवारिक जनों ने पुनः 2100/- दान स्वरूप दिये तथा शिविरों से लाभ उठाने का वादा किया।

शोक का विषय है कि हमारे पुराने साथी सेवक श्रीमान् जगजीत सिंह जी (लुधियाना) का प्रायः 74 वर्ष की आयु में 28 दिसम्बर, 2023 को देहान्त हो गया। वह बहुत उत्साही, दानी व वैज्ञानिक सोच के धनी व्यक्ति थे। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो!

शोक का विषय है कि मिशन के श्रद्धावान् श्री मदन लाल जी घई (राजपुरा, पंजाब) का 30 दिसम्बर, 2023 को प्रायः 82 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। आप अत्यन्त उत्साही, लेखक, समाजसेवी व सकारात्मक सोच के धनी व्यक्ति थे। पिछले दिनों 10 दिसम्बर को उनके निवास पर प्रो. नवनीत अरोड़ा जी व डॉ. सीमा जी ने उनसे भेंट करके विशेष खुशी हासिल की तथा उनके गंभीर बीमारी से ग्रस्त होने के बावजूद उनकी सकारात्मकता को देखकर उनके प्रति सम्मान महसूस किया। उनका परलोक मे हर प्रकार से शुभ हो! आप दोनों 11 जनवरी को बहावलपुर भवन, राजपुरा में उनके सम्बन्ध में रखी गई श्रद्धांजलि सभा में भी सम्मिलित हुए। इस सभा में अपने उद्बोधन में डॉ. नवनीत जी ने कहा - घई साहब के जाने से राजपुरा गरीब हो गया है। उन्होंने एक जीवन में कई ज़िन्दगियाँ जी हैं। उनके जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। निस्सन्देह - बहुत याद आयेंगे आप!

शोक का विषय है कि मिशन की श्रद्धावान् श्रीमती लाजवंती जी (संगरूर) का 31 दिसम्बर, 2023 को प्रायः 70 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। तत्पश्चात 2 व 3 जनवरी को उनके सम्बन्ध में शुभकामना का साधन श्री श्रेष्ठ अरोड़ा जी ने करवाया। परिवार ने राहत महसूस की। 12 जनवरी, 2024 को डॉ. नवनीत अरोड़ा जी ने भी शुभकामना का साधन करवाया। स्थूल देह त्यागी का परलोक में हर प्रकार

परिवार ही जीवन की सबसे मधुर गाथा होती है जिसमें प्यार, समर्पण और अपनेपन की कहानी छुपी होती है।

से शुभ हो!

शोक का विषय है कि हमारी पत्रिका के सुहृदय पाठक व दानी प्रो. बी एम नय्यर जी की माननीया धर्मपत्नी डॉ. सन्तोष नय्यर जी का प्रायः 83 वर्ष की आयु में 29 अक्टूबर, 2023 को देहान्त हो गया। वह सुहृदय डॉक्टर, मिलनसार व सेवाभावी महिला थीं। उनका परलोक में हर प्रकार से शुभ हो! 11 जनवरी, 2024 को उनके निवास पर प्रो. नवनीत अरोड़ा जी सपत्नीक तशरीफ ले गए। उनके धर्मपति प्रो. नय्यर (89 वर्षीय) तथा ननद सुश्री कमला जी (90 वर्षीय) से मिलकर बेहद खुशी व्यक्त की। हितकर बातचीत का लाभ उठाया। प्रो. नय्यर ने मिशन के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा 5000/- दान स्वरूप दिए। 1100/- उनकी सुपुत्री प्रो. रूप पाहूजा जी ने भी दान स्वरूप दिए। परिवार का शुभ हो!

श्रद्धांजलि सभा

श्री योगेन्द्र जी धीमान् (श्री संजय धीमान जी के बड़े भाई) के सम्बन्ध में शुभकामना की सभा उनके निवास पर 15 दिसम्बर 2023 की सायं प्रो. नवनीत अरोड़ा जी ने करवायी। 24 दिसम्बर, 2023 को माही पैलेस, रुड़की में दोपहर 1:00 बजे उनके सम्बन्ध में श्रद्धांजलि सभा प्रो. नवनीत अरोड़ा जी ने करवायी। साधन बहुत प्रभावशाली था। परलोक में उनका शुभ हो! परिवार की ओर से मिशन को कुछ दान भी मिला।

दूसरों के दोषों पर पी.एच.डी. करने से बेहतर है कि हम खुद की मानसिकता पर केवल ग्रेजुएशन ही कर लें।

श्रद्धा ज्ञान देती है, नम्रता मान देती है, योग्यता स्थान देती है, तीनों मिल जायें, तो सम्मान देती हैं।

पाठकों से निवेदन

किसी भी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति से सभी का सहयोग अपेक्षित रहता है। 'सबका शुभ हो' का उद्देश्य तभी परिपूर्ण हो पाएगा, यदि आप सभी अपनी-अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। आप इतना तो कर ही सकते हैं-

1. आपको 'सत्यदेव संवाद' का जो अंक अथवा कोई लेख अच्छा लगे, उसे ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को पढ़ायें, पता नहीं कब किसके दिल को कौन सी पंक्ति छू जाए।
2. आप जिन्हें स्नेह करते हैं, उनके नाम इस पत्रिका को जारी करवाकर उनके आत्मिक भले में सहायक बनें। आपकी यह छोटी सी सेवा उनके जीवन में सकारात्मक मोड़ ला सकती है।
3. पत्रिका की उन्नति हेतु आपकी प्रतिक्रियाएं व सुझाव बहुमूल्य हैं, इन्हें अवश्य भेजिए। आप अपने लेख, कविताएं व भाव प्रकाश भेजकर भी सहयोग दे सकते हैं।
4. किसी माह की 20 तारीख तक यदि आपको उस माह का अंक न मिले, तो पहले निकटवर्ती डाकघर से या अपने इलाके के पोस्टमैन से पूछताछ करें। यदि फिर भी वह अंक न मिले, तो रुड़की के पते पर सूचित करें तथा दो माह की पत्रिका एक साथ रजि. पार्सल द्वारा भेजने हेतु कहें। ऐसी परिस्थिति में 250/- प्रतिवर्ष सहयोग राशि भेजनी होगी।

सहयोग के लिए अनुरोध

सत्यधर्म बोध मिशन की ओर से संचालित विभिन्न गतिविधियों यथा भगवान् देवात्मा की शिक्षाओं के प्रचार, गोशाला, अभावग्रस्त बच्चों की शिक्षा, गरीब कन्याओं के विवाह, आध्यात्मिक व नैतिक पुस्तकों का प्रकाशन और वितरण, तिसंग ग्राम स्थित आश्रम की निःशुल्क गतिविधियों आदि को बढ़ाने हेतु सभी से दिल खोलकर आर्थिक सहयोग की अपील की जाती है।

ज्ञातव्य है कि मिशन को आयकर अधिनियम की धारा 80-जी के अधीन करमुक्ति की सुविधा भी प्राप्त है, जिसके अन्तर्गत दानदाता को आयकर में 50% छूट मिलती है तथा FCRA के अन्तर्गत भी मिशन रजि. है व विदेशों में रह रहे दान दाता सम्पादक महोदय से सम्पर्क करके FCRA A/C में दान भेज सकते हैं।

हर किसी को अपने ज्ञान का अभिमान तो होता है मगर अपने अभिमान का ज्ञान नहीं होता।

सत्यधर्म के वार्षिक पर्वों की तालिका (2024 ई0)

सं. वार्षिक साधन का

साधन का विशेष दिन

(1)	माता-पिता और सन्तान के सम्बन्ध में	29 जनवरी	सोमवार
(2)	भाई-बहन के सम्बन्ध में	14 फरवरी	बुधवार
(3)	सत्यधर्म बोध मिशन के सम्बन्ध में	05 मार्च	मंगलवार
(4)	पति-पत्नी के सम्बन्ध में	25 मार्च	सोमवार
(5)	वनस्पति जगत् के सम्बन्ध में	- अप्रैल	-
(6)	भृत्य - स्वामी के सम्बन्ध में	24 अप्रैल	बुधवार
(7)	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	22 मई	बुधवार
(8)	स्वदेश के सम्बन्ध में	17 जून	सोमवार
(9)	धर्मसाथियों के सम्बन्ध में	22 जुलाई	सोमवार
(10)	स्वास्तित्र के सम्बन्ध में	19 अगस्त	सोमवार
(11)	पशु जगत् के सम्बन्ध में	11 सितम्बर	बुधवार
(12)	परलोक के सम्बन्ध में	02 अक्टूबर	बुधवार
(13)	स्वजाति के सम्बन्ध में	12 अक्टूबर	शनिवार
(14)	भौतिक जगत् के सम्बन्ध में	01 नवम्बर	शुक्रवार
(15)	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	15 नवम्बर	शुक्रवार
(16)	परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का	16-20 दिसम्बर	सोमवार, शुक्रवार, शुभ जन्म महोत्सव

नोट - महोत्सव के दिन बाकी पर्व सुविधानुसार थोड़ा आगे-पीछे मनाये जा सकते हैं।

For mission details, Visit us : www.shubhho.com

सम्पर्क सूत्र :

सत्य धर्म बोध मिशन

रुड़की (99271-46962), दिल्ली (98992-15080), भोपाल (97700-12311),
सहारनपुर (92585-15124), गुवाहटी (94351-06136), गाज़ियाबाद (93138-08722), कपूरथला
(98145-02583), चण्डीगढ़ (94665-10491), पदमपुर (9309-303537), अम्बाला (94679-48965),
मुम्बई (98707-05771), पानीपत (94162-22258), लुधियाना (80542-66464)

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसेट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी,
जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, झी - 05, हिल व्यू अपार्टमेंट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242